SHRI SATHYANARAYANA BELERI

Shri Sathyanarayana Beleri is a farmer- turned- paddy conservator of Nettanige, a small quaint hamlet located in the district of Kasargod, the northern most part of Kerala bordering Karnataka.

2. Born on 15th June, 1973, Shri Beleri with single-minded devotion is trying to preserve this seed heritage. His invaluable collections include some of the oldest Kerala grown varieties during pre-independent era such as Aryan, Chitteni, Kayama, Parambuvattan, Thekkencheera; important varieties with medicinal properties such as Navara, Rakthasali, Karigajavali, Chakayoporiyatt and so on. Along with traditional varieties of paddy, he is also conserving important traditional varieties of areca nut, nutmeg, black pepper and jack. Further, he is an apiarist and has the skill in grafting/budding of plants.

3. Shri Beleri's chance encounter, more than a decade ago, with the Gandhian and pioneering organic farmer Shri Cherkady Ramachandra Rao in Udupi district, Karnataka made him turn to conservation, to start with traditional Rajakayama paddy seeds, a variety requiring less water. Later, with increased interest and commitment he travelled across Karnataka, Kerala, and Tamil Nadu to collect seeds of traditional rice varieties. Thus, what started as a hobby became a passion for him and he is now preserving more than 650 traditional paddy cultivars mainly traditional land races of Karnataka and Kerala.

4. Conservation of paddy germplasm is a cumbersome process requiring much investment of space, time, labour and energy. The land owned by Shri Beleri with its highly undulating terrain and red lateritic soils is unsuitable for paddy cultivation. However, these constraints did not hamper his conservation efforts, rather it led him to innovate. He started growing paddy in polybags. Different varieties are harvested, sun-dried and then stored in paper bags. By following this method, he has conserved as many as 650 land races in an area of 200 square meters. Besides conserving he also has shared these germplasms with important Research Institutes, State Agricultural Universities of South India and farmers that too free of cost.

श्री सत्यनारायण बेलेरि

श्री सत्यनारायण बेलेरि कर्नाटक की सीमा से लगे केरल के सबसे उत्तरी भाग कासरगोड जिले में स्थित एक छोटे से गांव नेट्टानिगे के किसान और धान संरक्षक हैं।

2. 15 जून, 1973 को जन्मे, श्री बेलेरि पूरी लगन के साथ इस बीज की धरोहर को संरक्षित करने का प्रयास कर रहे हैं। उनके इस अनमोल संग्रह में स्वतंत्रता से पहले उगाई जाने वाली केरल की कुछ सबसे पुरानी किस्में शामिल हैं जैसे–आर्यन, चिट्टेनी, काइमा, परम्बुवट्टन, थेकेंचीर; औषधीय गुणों वाली महत्वपूर्ण किस्में, जैसे– नवरा, रक्तासली, करीगजवली, चकायोपोरियाट आदि। धान की पारंपरिक किस्मों के साथ–साथ, वे सुपारी, जायफल, काली मिर्च और जैक की महत्वपूर्ण पारंपरिक किस्मों का भी संरक्षण कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, वह मधुमक्खी पालन करते हैं और पौधों की ग्राफ्टिंग/बडिंग में भी सिद्धहस्त हैं।

3. एक दशक से अधिक समय पहले श्री बेलेरि की कर्नाटक के उडुपी जिले में गांधीवादी और अग्रणी कार्बनिक किसान श्री चेरकडी रामचंद्र राव से भेंट हुई, जिसने उन्हे संरक्षण की ओर मोड़ा, जिसकी शुरुआत पारंपरिक राजकायम धान के बीजों के साथ शुरू हुई, यह एक ऐसी किस्म है जिसमें कम पानी की आवश्यकता होती है। बाद में, अधिक रुचि और प्रतिबद्धता के साथ उन्होंने पारंपरिक चावल किस्मों के बीज एकत्र करने के लिए कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु की यात्रा की। इस प्रकार, जिस कार्य को उन्होंने शौक के रूप में शुरू किया था वही कार्य उनका ध्येय बन गया और वे अब ऐसे 650 से अधिक पारंपरिक धान के बीजों को सहेजने का कार्य कर रहे हैं, जो कि मुख्य रूप से कर्नाटक और केरल की भूमि की पारंपरिक धान की नस्लें हैं।

4. धान जीनों (जर्मप्लाज़्म) का संरक्षण दुष्कर प्रक्रिया है, इस कार्य में अधिक स्थान, समय, श्रम और ऊर्जा की आवश्यकता होती है। श्री बेलेरि की अपनी जमीन अत्यधिक लहरदार है और इसकी मिट्टी लाल लेटेराइट है, जो जमीन धान की खेती के हिसाब से अनुपयुक्त है। हालांकि, इन रूकावटों से उनके संरक्षण के प्रयासों में कोई बाधा उत्पन्न नहीं हुई, बल्कि इसने उन्हें नवाचार करने के लिए प्रेरित किया। वह पॉलीबैग में धान उगाने लगे। विभिन्न किस्मों की कटाई की जाती है, उन्हें धूप में सुखाया जाता है और फिर कागज की थैलियों में इनका संग्रहण किया जाता है। इस तरीके को अपनाकर उन्होंने 200 वर्ग मीटर के क्षेत्र में 650 धान की किस्मों का संरक्षण किया है। संरक्षण के अलावा, उन्होंने इन जर्मप्लाज्मों को महत्वपूर्ण अनुसंधान संस्थानों, दक्षिण भारत के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों और किसानों के साथ साझा किया है, वह भी निःशुल्क।